क्रिसमस के रहस्य को समझकर उसका सच्चे अर्थ में उत्सव मनाएं

विश्व के महान धर्मो में क्रिश्चीयन धर्म का एक प्रमुख स्थान है। इस धर्म के स्थापक ईशु ख्रीस्त के जन्म दिवस 25 दिसंबर को पूरे विश्व में क्रिसमस पर्व के रूप में मनाया जाता है। सामान्यत: क्रिसमस का उत्सव कुछ ऐसे मनाते है: आनंद-प्रमोद में लीन होकर, पसंदीदा भोजन का आनंद लेकर, गाने-बजाने के साथ डांस करके, आतिशबाज़ी करके, घर तथा चर्च को रौशनी से सजाकर, कई जगह शराब की महफिल सजाकर। फिर कई स्थानों पर ईशु के जीवन प्रसंगो की प्रदर्शनी भी देखने में आती है। कई लोग चर्चों में जाकर प्रभु को प्रार्थना करते हैं। भले हम यह सब करके पर्व का आनंद लें, लेकिन क्रिसमस के इस पर्व की गरिमा तथा पवित्रता की बात करें तो क्या इस प्रकार का उत्सव मनाना पर्याप्त है? क्या आपको नहीं लगता कि क्रिसमस के पर्व के रहस्य तथा उसके दिव्य संदेश को ध्यान में रख कर हमें उसको मनाना चाहिए!

पैगंम्बर ईशु ने जीवन पर्यंत पूरे विश्व को प्रेम, दया, करुणा, क्षमा जैसे आधारभूत जीवन के मूल्यों का संदेश दिया है। उनके विरोधियों ने उनके जीवन में अनेक विध्न खड़े किए तथा उनको अनेक कष्ट भी दिए। परंतु इस सहनशीलता की मूर्ति ने इन कष्टों को स्वस्थतापूर्वक सहकर सहनशीलता का श्रेष्ठ उदाहरण विश्व के सामने प्रस्तुत किया। उनके जीवन के अंतिम समय में अनेक विरोधियों ने उनको काँटों का ताज पहनाया। उनके ऊपर पत्थर फेंके और अंत में क्रोस पर चढ़ाकर शरीर पर खीलें ठोक दिए। ऐसी परिस्थिति में भी उनके मुह से ये शब्द निकलें, “हे प्रभु, इनको माफ करना, क्योकि इनको यह नहीं मालूम कि वे क्या कर रहे है।” क्षमा करने का, अपकारी पर भी उपकार करने का यह कितना श्रेष्ठ उदाहरण है। उनके जीवन से प्रेरणा लेकर हम भी यदि सहनशीलता को धारण कर लोगों को माफ करेंगे, अपकारी पर भी उपकार करेंगे, दुश्मन को भी मित्र बनाएंगे और सबको प्रेम करेंगे तो सच्चे अर्थ में क्रिसमस का उत्सव मनाना कहा जाएगा।

क्रिसमस में सांताक्लोज का भी विशेष महत्व है। उनको सफ़ेद बाल, सफ़ेद दाढ़ी तथा लाल ड्रेसवाला बूढ़े फरिश्ते के रूप में बताया जाता है। वृद्धत्व परिपक्वता कि निशानी है, सफ़ेद बाल पवित्रता की निशानी है। ऐसा माना जाता है कि वह देर रात में आते हैं और बच्चों के लिए अनेक प्रकार कि भेंट, खिलौने, चॉकलेट, इत्यादि लाते हैं। इसके अलावा बच्चों के साथ खेलकर उनको आनंद-उल्लास में ले आते हैं। जो बिलकुल अकेले हैं, जिनका इस संसार में कोई नहीं है, ऐसे बच्चों को सांताक्लोज विशेष प्रेम देकर उनमें आशा जगाकर आत्मविश्वास से भरपूर कर देते हैं। वर्तमान समय में जब कि शोषितों, वंचितो, पीड़ितो, दु:खी, अशांत आत्माओं की संख्या दिन-प्रतिदिन बढ़ती

जा रही है, तब हम सभीको सांताक्लोज से प्रेरणा लेकर, परिपक्व बनकर दूसरों के मददरूप बनना चाहिए तथा जीवन में पवित्रता को अपनाकर सांताक्लोज जैसे फरिश्ता बनकर पीड़ितों, अनाथ तथा गरीबों में खुशी, आनंद, उमंग भरना चाहिए। तभी क्रिसमस का सच्चे अर्थ में उत्सव मनाया एसे माना जाएगा।

क्रिसमस के दौरान घर के बाहर तथा चर्च में तारा के प्रतिक को लटकाया जाता है। प्रकाशित तारा ज्योति स्वरूप आत्मा का तथा लाइट स्वरूप परमात्मा का प्रतिक है। ईशु ने परमात्मा को प्रकाश स्वरूप माना है। त्योहार के इन दिनों में ये प्रकाशित तारों में से प्रेरणा लेकर यदि हम आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर सब को आत्मिक दृष्टि से देखने का प्रयत्न करेंगे तो सब के लिए सरलता से समत्व का, बंधुत्व का तथा प्रेम का भाव रख सकेंगे। परमेश्वर महाज्योति, दिव्यज्योति स्वरूप हैं। वह हमारी आत्मा का परलौकिक पिता है। क्रिसमस के दिनों में यदि हम आत्मिक स्वरूप में स्थित होकर परमेश्वर को चमकते सितारे के स्वरूप में अर्थात प्रकाश के स्वरूप में प्रेम से तथा पूरे समर्पण भाव से याद करेंगे तो सच्चे अर्थ में क्रिसमस मनाया ऐसे माना जाएगा।

क्रिसमस के दौरान घर-घर में क्रिसमस ट्री लाया जाता है और उसको विशेष करके लाइट्स, बैलून, छोटी-छोटी घंटियाँ, चोकलेट्स, केन्डी, रिबन, गहने, आदि से बहुत सजाया जाता है। क्रिसमस ट्री एक सदाबहार वृक्ष है। उसको खूब पवित्र माना जाता है। दूसरे शब्दों में वह जीवन की पवित्रता का भी प्रतीक है। घर का वास्तु दोष दूर करनेवाला तथा खराब आत्मा या प्रेत आत्मा के प्रभाव को दूर करनेवाला माना जाता है। यह सदाबहार वृक्ष पूरे वर्ष के दौरान कभी भी सूखता नहीं है। यह पवित्र वृक्ष हमें संदेश देता है कि हमें भी सदा के लिए अपनी पवित्रता को बनाए रखना है तथा सदा खुश रहना है और सब को खुश रखना है। जैसे क्रिसमस ट्री को आकर्षक रीति से सजाते हैं वैसे ही यदि हम अपनी आत्मा को इन पवित्र दिनों के दौरान अनेक प्रकार के गुणों, मूल्यों तथा शक्तियों से सजाएंगे तो सच्चे अर्थ में क्रिसमस मनाना कहा जाएगा।

परमेश्वर को प्रेम करो, अपने पड़ोसी को प्रेम करो, नफरत को प्रेम में, गुस्से को नम्रता में बदलकर अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाओ, दूसरों से जैसा व्यवहार आप चाहते हो, वैसा व्यवहार आप भी दूसरों के साथ करो। अपने प्रभु के साथ प्रार्थना द्वारा बातचीत कर उनका आभार मानें। आपका साथ निभाने के लिए वह तैयार है। प्रभु ईशु के दिए इस संदेश को क्रिसमस के दिनों में हमारे जीवन में चरितार्थ करें। विश्व के 135 से भी ज्यादा देशों में कार्यरत आंतर-राष्ट्रिय शैक्षणिक संस्था प्रजापिता ब्रह्माकुमारी विश्वविद्यालय में भी क्रिसमस को उपरोक्त ढंग से विशेष रूप से मनाते है।

....ॐ शांति ....

बी. के. प्रफुल्लचंद्र

(M) +91 98258 92710